IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

औपनिवेशिक नीतियों का भारतीय व्यापार पर प्रभाव (1772–1829 ई0)

डा0 अवधेश कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर –इतिहास

डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय,

सन्त रविदास नगर, भदोही

सारांश

हिमालय के तलहटी में स्थित नेपाल, तिब्बत, चीन तथा भूटान के साथ व्यापार के माध्यम से लाभ कमाने के उद्देश्य से 1774 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जार्ज बोगले को इन देशों से व्यापारिक सुविधाए प्राप्त करने के उद्देश्य से भेजा। बोगले को भेजने का मुख्य उद्देश्य इन देशों में व्यापार की सम्भावनाओं का पता लगाना था। 1823 ई0 के पश्चात भारत में कहवा की खेती होना प्रारम्भ हुई। साथ ही भारत में चाय की खेती किए जाने पर विचार किया जाना गम्भीरता से शुरू हो गया। 1813 ई0 का अधिनियम पारित हो जाने के पश्चात कम्पनी के व्यापारिक हिसाब अलग अलग क्षेत्रों के साथ प्रदर्शित किए जाने लगे। धीरे –धीरे करके भारतीय उद्योग धन्धों का हरास होने लगा। जिससे भारत के साथ ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार कम होने लगा भारत के उत्पादन को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के औपनिवेशिक नीति के कारण हतोत्साहित किया जाने लगा। यद्यपि कि भारत में नील के उत्पादन में वृद्धि हुई किन्तु रूई का निर्यात घटा। धीरे धीरे भारतीय उद्योग धन्धें नष्ट होने लगे तथा इग्लैण्ड से आयतित माल की मात्रा बढ़ने लगी।

मुख्य शब्द : ईस्ट इण्डिया कम्पनी, नेपाल, तिब्बत, चीन, भूटान, उद्योग धन्धों, औपनिवेशिक नीति

1757 ई0 के प्लासी के युद्ध के पश्चात ब्रिटिश शासन के स्थापना की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। बंगाल में अपने पैर जमाने के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पूरे भारत में विस्तार करना प्रारम्भ किया। लार्ड क्लाइव के नेतृत्व में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के पड़ोसी देशो में व्यापार की सम्भावना तलाशने का प्रयास करने लगी। वारेंन हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल बनाने के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने असम, भूटान तथा तिब्बत में व्यापार की सम्भावनाऐं खोजने के लिए प्रयास शुरू किया। कूच बिहार ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सटा हुआ एक राज्य था कूच बिहार में प्रायः भूटान के सैनिकों का आक्रमण होता रहता था।

कूच बिहार का राज्य भूटान के आक्रमण से बचने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी से रक्षा करने की वचन बद्धता के आधार पर कम्पनी पर आश्रित हो गया।[1] इस प्रकार से भूटानी सैनिकों के आक्रमण से बचने के लिए कूच बिहार ने ईस्ट इण्डिया के साथ संधि कर लिया। हिमालय के तलहटी में स्थित नेपाल, तिब्बत, चीन तथा भूटान के साथ व्यापार के माध्यम से लाभ कमाने के उद्देश्य से 1774 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जार्ज बोगले को इन देशों से व्यापारिक सुविधाए प्राप्त करने के उद्देश्य से भेजा। बोगले को भेजने का मुख्य उद्देश्य इन देशों में व्यापार की सम्भावनाओं का पता लगाना था।

वारेन हेस्टिंग्स ने बोगले को यह स्पष्ट निर्देश दिया था कि वह तिब्बत की प्रथाओं तथा जलवायु के बारे में विस्तार से जानकारी एकत्रित करें। [2] । बोगले 1774 ई0 में इंग्लैण्ड की बनी हुई कई वस्तुओं को लेकर` तिब्बत के धर्मगुरू से मिलने बंगाल से रवाना हुए। भूटान होते हुए वह तिब्बत पहुचें तथा 1775 ई0 में वह वापस कलकत्ता लौट आए। कलकत्ता वापस लौटने के पश्चात उन्होनें वारेंन हेस्टिग्स को यह बताया कि भूटान तथा तिब्बत में चाय का प्रयोग किया जाता है।[3] कुछ समय पश्चात 1823 ई0 के पश्चात भारत में कहवा की खेती होना प्रारम्भ हुई। साथ ही भारत में चाय की खेती किए जाने पर विचार किया जाना गम्भीरता से शुरू हो गया। पहाड़ी इलाकों में चाय के उत्पादन किए जाने की सम्भावना पर डा0 वालीक ने एक महत्वपूर्ण लेख प्रस्तुत किया – ''इस पौधे की सबसे महत्वपूर्ण खेती चीनी साम्राज्य के उत्तरी अक्षांश 27 और 30 के बीच में स्थित इलाकों में होती है। वहाँ लगभग सारी काली चायें पैदा होती हैं। दक्षिण में भी यह कैन्टन के समुद्र तट तक बहुत प्रचुर मात्रा में पैदा की जाती है।

पेनांग में स्वर्गीय मिस्टर ब्राऊन इस अप्रासंगिक तथ्य से परिचालित होकर गलत रास्ते में चले गये कि उस टापू की आबोहवा में यह पौधा अच्छी तरह उगता है। कुल मिलाकर यह पौधा अच्छी तरह पैदा हुआ, पर जब फसल की कटाई का समय आया, तो मालूम हुआ कि उस पर जो श्रम, समय और खर्च हुआ था, उसकी तुलना में उपज की किस्म बहुत घटिया थी।

यवद्वीप में भी ऐसी परिस्थितियों में इसी प्रकार के प्रयत्न बिल्कुल व्यर्थ हुए और इसलिए बाद को प्रयत्न नहीं किये गये। मुझे ऐसी सूचना मिली है कि उसके बाद कई सालों तक डच सरकार ने लंका के दक्षिणी भागों में जो प्रयोग किया, उनमें भी विशेष सफ–लता नहीं मिली ।

''20 साल पहले रायोडीजेनिरो में बड़े पैमाने पर चाय के पौधों की खेती शुरू की गई। उपज स्वाद में इतनी खराब रही कि हाल में यह प्रयास लगभग छोड़ दिया गया है।

''मुझे ब्राजील में उत्पन्न चाय के नमूने को चखने का एक मौका मिला। इसका स्वाद बहुत ही बुरा रहा..।

''ब्रिटिश राज्य के ईस्ट इंडीज में ऐसे इलाके हैं, जो चाय उगाने वाले इलाकों से इतने अधिक मिलते–जुलते हैं कि इस में कोई सन्देह नहीं कि यदि उनमें चाय की खेती हो, तो वह चीन की सबसे अच्छी चाय का मुकावला कर सकेगी। कुमाऊँ, गढ़वाल और सिमौर के इलाकों की स्थिति, जहाँ तक मालूम है, चीन और जापान की तरह है, जिसमें चाय का पौधा बहुत अधिक मात्रा में और लगभग सम्पूर्णता के साथ पैदा होता है।''''''

''मैं पहले ही बता चुका हूँ कि नेपाल में एक किस्म की केमिलिया पैदा होती है और 1818 में इसका ब्यौरा प्रकाशित करते समय मैंने यह देखा कि काठमाण्डू के एक बाग में चाय का दस फुट लम्बा पौधा खड़ा है और उसमें साल के अन्तिम चार महीनों में खूब फल और फूल आ रहे हैं। जब कुछ साल बाद मैं फिर उस राजधानी में गया तो मैंने वह पौधा फिर से देखा। तब मुझे पता लगा कि इसका बीज गोरखा सरकार द्वारा चीन में भेजे जाने वाले त्रिवार्षिक राजदूतों के द्वारा लौटते समय पीकिंग से लाया गया था।

''यदि हम इन प्रासंगिक परिस्थितियों पर विधिवत् विचार करें, तो हमें यह आशा उत्पन्न होगी कि सुनियोजित प्रबन्ध मे थोड़े दिनों के अन्दर चाय का पौधा ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज्यों में बहुत जोरों के साथ पैदा हो सकता है और हम अधिक काल तक एक तानाशाही राष्ट्र की इच्छा और खामख्याली पर सभ्य जीवन के एक आराम और विलासिता की पूर्ति के लिए रहेंगे ।''[4] 19 वीं शताब्दी के तीसरे तथा चौथे दशक से भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कई धातुओं जैसे लोहा, सोना, ताँबा आदि के उत्पादन के विषय में विचार बनाना प्रारम्भ किया। भारत में उत्तम कोटि का कोयला उपलब्ध था। इसके अलावा अत्यधिक वन होने के कारण साल, शीशम आदि वृक्षों की लकड़ियों का प्रयोग विभिन्न कामों में होता था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तिब्बत तथा नेपाल के साथ व्यापारिक लाभ प्राप्त करने के लिए 1783 ई0 में सैमुअल टर्नर को तिब्बत भेजा किन्तु 1792 ई0 में तिब्बत तथा नेपाल के मध्य युद्ध हो जाने के कारण वह कोई व्यापारिक लाभ नही प्राप्त कर सके। [5]

1813 ई0 का अधिनियम पारित हो जाने के पश्चात कम्पनी के व्यापारिक हिसाब अलग अलग क्षेत्रों के साथ प्रदर्शित किए जाने लगे। धीरे –धीरे करके भारतीय उद्योग धन्धों का हरास होने लगा। जिससे भारत के साथ ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार कम होने लगा भारत के उत्पादन को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के औपनिवेशिक नीति के कारण हतोत्साहित किया जाने लगा। कलकत्ता से निम्नलिखित 40 साल में भेजे जाने वाले माल का विवरण[6] यह दिखलाता है कि भारतीय व्यापार हतोत्साहित हुआ –

वर्ष	रुई (गांठें)	सूती माल (गांठें)	रेशम (गांठें)	रेशमी माल (गांठें)	लाख (मन)	लाख नील का रंग (बक्स)
1800	506	2636	213	-	-	12811
1801	222	6341	238	-	-	9928
1802	2072	14817	400	-	-	8694
1803	2420	13649	1232	-	-	12986
1804	602	9631	1926	आंकड़े नहीं	आंकड़े नहीं	18339
1805	2453	2325	1327	दिये गये	दिये गये	13486
1806	7315	651	1689	-	-	17542
1807	3717	1686	482	-	-	19452
1808	2016	237	817	-	-	16622
1809	40781	104	1124	-	-	8852
1810	3477	1167	949	-	-	13264
1811	160	955	2623	-	-	14335
1812	-	1471	1889	-	-	13703
1814	11705	557	638	-	-	23672
1813	21587	919	1786	-	-	16544
1815	17228	3842	2796	-	-	26221
1816	85024	2711	8884	-	-	15740
1817	50176	1904	2260	-	-	15583
1818	127124	666	2066	-	-	13044
1819	30683	536	6998	468	-	16670

1820	12939	3186	6805	522	-	12526
1821	5415	2130	6977	704	-	12635
1822	6544	1668	7893	950	-	19751
1823	11714	1354	6357	742	14190	15878
1824	12415	1337	7069	1105	17607	22472
1825	15800	1878	8016	1558	13491	26837
1826	15101	1253	6856	1233	13573	14904
1827	4735	541	7719	971	13756	30761
1828	4105	736	10431	550	15379	19041
1829	-	433	7000	-	8251	27000

उपरोक्त आकड़ों से यह स्पष्ट है कि यद्यपि कि भारत में नील के उत्पादन में वृद्धि हुई किन्तु रूई का निर्यात घटा। धीरे धीरे भारतीय उद्योग धन्धें नष्ट होने लगे तथा इंग्लैण्ड से आयतित माल की मात्रा बढ़ने लगी।

औपनिवेशिक नीतियों के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में ठहराव दिखाई पड़ा। 1870 से 1914 ई0 के मध्य कृषि आय में केवल 33 प्रतिशत की वृद्धि हुई। [7] ईस्ट इण्डिया कम्पनी के औपनिवेशिक नीतियों के फलस्वरूप भारत में उत्पादित वस्तुओं का निर्यात घटने लगा तथा इंग्लैण्ड से आयातित वस्तुओं की मात्रा बढ़ने लगी। इंग्लैण्ड में लार्ड एलेनबरो ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की बुराईयों की विवेचना करते हुए कहा – ''हम चीनी के साथ क्या व्यवहार करते हैं ? जब यह किसी शहर में जाती है, तो इस पर 5 प्रतिशत चुंगी और 5 प्रतिशत शहरी शुल्क लगता है और जब इससे कोई चीज तैयार होती है और शहर के बाहर भेजी जाती है, तो उस पर उसी शहर को 5 प्रतिशत और शुल्क देना पड़ता है। यानी भारत में काम में लायी हुई भारतीय चीनी पर 15 प्रति–शत शुल्क देना पड़ता है ।

''कम से कम 235 विभिन्न वस्तुओं पर आन्तरिक कर लगाये गये हैं। तटकर में घरेलू और व्यक्तिगत इस्तेमाल की लगभग सभी वस्तुएँ शामिल हैं और तलाशी के जो कायदे बनाये हुए हैं, वे बहुत ही कष्टप्रद और अपमानजनक हैं। वस्तुतः इससे राजस्व को कोई भी खास फायदा नहीं होता । तलाशी लेने की शक्ति का अधिकार सचमुच कोई कराधान अधि–कारी प्रयोग करना चाहे तो उससे आन्तरिक व्यापार पर विराम लग जायेगा । क्योंकि इसमें स्वतः काफी विलम्ब हो जायेगा। यही कारण है कि इस शक्ति का प्रयोग कम से कम किया जाता है और केवल वहीं किया जाता है जहाँ कुछ पैसा ऐंठना हो ।

''इसका प्रभाव राष्ट्रीय सम्पदा से कहीं अधिक दृष्टिगोचर होता है आम लोगों के व्यक्तिगत चरित्र पर । हालत यह है कि प्रत्येक व्यापारी, प्रत्येक निर्माता और प्रत्येक भ्रम–पार्थी अपनी सुरक्षा के लिए और अपने निजी आराम और सुविधाओं के लिए विवश हो जाता है और इसमें उसके परिवार की महिलाओं की भावनाओं को भी ठेस लग सकती है। यह सोचकर सरकार के अधिकारियों से गैर कानूनी मेल–मिलाप बढ़ाना होता है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिससे हमारे जन–समुदाय को निराशा होती है। लगता है कि यह एशिया भर के समस्त सुरक्षा व्यापारियों को यह बातें नागवार लगती हैं।

''अपने अधिकारों से ही हम तुरन्त 6 करोड़ आदमियों को आन्तरिक संचार की स्वतन्त्रता दे सकते हैं। बंगाल के निवासी अपने परिश्रम, स्वभाव, उपजाऊ भूमि के मालिक होने तथा समूचे इलाके में नाव चलाने लायक नदियों का जाल बिछा होने के कारण और किसी विदेशी आक्रान्ता की पहुँच से बाहर होने के कारण तथा निष्पक्ष प्रशासन के कानूनों से सम्पत्ति की यथेष्ट सुरक्षा मिलने के कारण दुनिया भर के लोगों से कहीं अधिक समृद्धि का अवसर पायेंगे और इसमें सरकार की उदार नीतियों का भी सहयोग होगा।''[8]

इस प्रकार से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापारिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से हिमालय के तलहटी में स्थित राज्यों नेपाल, तिब्बत, भूटान तथा चीन से व्यापारिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से कई मिशन भेजे किन्तु कम्पनी 18 वीं सदी तक कोई ठोस लाभ अर्जित नहीं कर सकी। 19 वीं शब्ताब्दी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए विभिन्न व्यापारिक नीतियाँ बनाने लगी जिससे भारतीय उद्योग धन्धों का धीरे धीरे हरास प्रारम्भ हुआ। भारत से निर्यात होने वाली वस्तुओं की मात्रा घटने लगी जबकि इंग्लैण्ड के माल का आयात बढ़ने लगा।

सन्दर्भ

1. *कूच बिहार सलेक्ट रिकार्डस,* 1788, बनर्जी, ए.सी., *द ईस्टर्न फ्रंटियर ऑफ ब्रिटिश इण्डिया,* कलकत्ता, 1934 में पृ0 34 में उद्धृत।

2. ग्लीग, जी.आर., *मेमोयर्स ऑफ द राइट ऑनरेबल वारेंन हेस्टिंग्स,* लन्दन, 1841, खण्ड 1, पृ0 111

3. मजूमदार आर.सी. (सं0), *ब्रिटिश पैरामाउन्टसी एण्ड इण्डियन रेनेसा,* भाग 1, *द हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ द इण्डियन पीपुल,* खण्ड 9, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, 2002,

4. दत्त, रोमेश, *इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* खंड–1, नई दिल्ली, (पुनर्मुद्रण) 2006, पृ0–200।

5. मजूमदार आर.सी. (सं0), *पूर्वोक्त,* पृ0 1059

6. लोकसभा समिति के सामने गवाही, 1832, जिल्द 2, परिशिष्ट 31 दत्त, रोमेश, *पूर्वोक्त* पृ0 4 में उद्धृत।

7. रॉय, तीर्थकंर, *द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया 1857–1947,* आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2006, पृ0 81

8. लार्ड ऐलिनबुर्ग का पत्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी के उपाध्यक्ष के नाम : दिनांक 18 मार्च, 1835 दत्त, रोमेश, *पूर्वोक्त* पृ0 4 में उद्धृत।